# lar d`ikyq nkl ds lkfgR; esa HkfDrdkyhu psruk vkSj leUo; dh Hkkouk % ,d v/;;u

राँची वि”वविद्यालय, राँची से हिंदी में पीएच.डी उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रारूप की रूप रेखा

fgUnh foHkkx
¼ekufodh ladk;½
jkaph fo”ofo|ky;] jkaph

**भाोधनिर्दे**f”kdk
डॉ मीरा कुमारी
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
के.सी.बी.महाविद्यालय, बेड़ो

**भाोधार्थी**
रीतु कुमारी
एम.ए, नेट–2024

# lar d`ikyq nkl dk lkfgR; esa HkfDrdkyhu psrruk vkSj leUo; dh Hkkouk % ,d v/;;u

**भाोध परिचय**

हिंदी साहित्य में तुलसीदास का रामचरितमानस, सूरदास का सूरसागर, रहीम के दोहे, कबीर की साखी, मीरा के विरह–गीत, अष्टछाप कवियों के पद, रसखान के सवैये आदि भक्ति प्रधान रचनाओं का वि”ोष स्थान है। इन रचनाओं में वर्णित जीवन द”र्न हर युग में मानव समाज का मार्गद”र्न करने की अद्‌भुत क्षमता रखते हैं। इन रचनाओं को संत साहित्य कहा जाता है। इस संत साहित्य से हिंदी की वि”वव्यापी पहचान जुड़ी हुई है। इनमें वर्णित भावों की गहराई, चिंतन की सूक्ष्मता, ज्ञान की उत्कृष्टता, मानव समाज का मार्गद”र्न करने वाली क्षमता और रस की मधुरता विलक्षण है। सौंदर्य, समाज, लोक–जागरण, प्रेम, द”र्न, ज्ञान, वैराग्य, जीवनमूल्य और निष्ठा संत साहित्य की सहज चेतना है। यही चेतना भारत की विरासत है, यहाँ की संस्कृति में घुली मिली है। ये कभी पुरानी नहीं पड़ सकती, हर युग में प्रासंगिक है। क्योंकि हर युग में, हर स्थान में, हर स्थिति में मनुष्य का अंतिम लक्ष्य सुख की प्राप्ति ही है। सुख से रहने की आकांक्षा के कारण ही तो सुविधाओं का नित नूतन आविष्कार हो रहा है और उन सुविधाओं के भोग के पीछे इतनी भागमभाग मची हुई है। लेकिन, भारतीय द”र्न के अनुसार, भौतिक प्रगति सुविधा तो दिला सकती है पर मन की शांति नहीं क्योंकि सच्चा सुख, सच्ची शांति भक्ति की चेतना से ही मिलती है।

वर्तमान समय में भारतीय समाज अपने पूर्वज महापुरुषों के अनुभवजन्य जीवन द”र्न के महत्व को समझता है और भौतिक प्रगति से प्राप्त सुविधाओं की अनिवार्यता को भी स्वीकार करता है। वह विज्ञान की खोज और भक्ति की चेतना दोनों को आव”यक समझता है और दोनों की इच्छा रखता है। आज के युग की माँग ही है भौतिक विज्ञान के साथ भक्ति की चेतना का समन्वय। और संत श्री कृपालु दास का साहित्य इस समन्वय

की भावना का ही मूर्त रूप है। इनकी रचनाओं में आधुनिक युग की विकासवादी नीति के साथ भक्तिकालीन आत्मकल्याण की भावना का अद्भुत समन्वय है।

संत कृपालु दास का परिचय केवल एक कवि के रूप में देना उचित नहीं है। इसीलिए यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी है कि वे आधुनिक युग के एक अद्वितीय आध्यात्मिक विभूति थे, जिनको सन् 1957 में 500 मूर्धन्य विद्वानों की सभा का”ी विद्वत् परिषत् ने पंचम मूल जगद्गुरु उत्तम की उपाधि दी थी तथा कई अन्य तरह के सम्मानसूचक अलंकारों से विभूषित किया था। इन उपाधियों में दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं– पहला निखिल द”ान समन्वयाचार्य और दूसरा भक्तियोग रसावतार। अतएव इनकी रचनाएँ कोरी कवि प्रतिभा नहीं कही जा सकती। बल्कि उनमें कुछ ऐसा है कि संभवतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य को एक लंबी अवधि के बाद तुलसी, सूर जैसा कोई अटल ध्रुव तारा मिला है। परंतु ऐसा कुछ भी कहने के लिए एक ऐसे शोध की आव”यकता है जिसमें भक्तिकालीन चेतना को श्री कृपालु जी के साहित्य के संदर्भ में समझा जाए। साथ ही, यह भी समझा जाए कि पूर्ववर्त्ती चार जगद्गुरुओं के अद्वैतवाद, वि”ाष्टाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, द्वैतवाद तथा बाद के प्रचलित अन्य वाद–विवादों का संत कृपालुदास के साहित्य में कैसे समन्वय है?

वस्तुतः भारत की चिंतनधारा में श्रद्धा, भक्ति और प्रेम ही मूल द”ान है। यह मानव–मूल्य भारतीय संस्कृति की नींव है, इसी पर मनुष्यता का महल बन सकेगा जो सुंदर भी होगा और मजबूत भी होगा। यहाँ पर मुझे प्रसाद जी के चंद्रगुप्त नाटक की एक पंक्ति याद आती है, 'अन्य दे”ा मनुष्यों की जन्मभूमि है, भारत मनुष्यता की जन्मभूमि है।' मनुष्यता का यह सर्वोच्च आद”ा ऐसे संतों की वाणी से ही तो पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। यह भारतदे”ा का सौभाग्य ही है कि समय–समय पर ऐसे संत यहाँ जन्म लेते हैं जो अपनी रचनाओं से जनमानस की सोई चेतना को जगाते हैं। मुझे लगता है कि हिंदी साहित्य की समृद्ध संपदा और वि”वव्यापी कीर्ति में कृपालु जी का साहित्य नवीन रत्न भंडार है। इस भंडार में ऐसे ऐसे रत्न हैं जिनके प्रका”ा से जीवन की लक्ष्य और लक्ष्य को पाने का मार्ग दिखाई पड़ता है।

## भाोध की प्रेरणा

शोध की प्रेरणा मुझे कैसे मिली ? इस प्र”न के उत्तर में मैं यह बात पूरी ईमानदारी से बताना चाहूँगी कि यह मेरे किसी पूर्वसंकल्प का कोई परिणाम नहीं है। बल्कि जीवनपथ पर मिले अनुभव का प्रतिफलन है।

हिंदी साहित्य में ऑनर्स और एम,ए करने के दौरान मध्ययुगीन कविताओं के प्रति मेरा आकर्षण धीरे–धीरे बढ़ने लगा था। इसी आकर्षण से प्रेरित होकर मैंने अपने पाठ्यक्रम को

मनोयोग से पढ़ा। इसके साथ ही पूर्व–मध्ययुगीन रचनाओं पर कुछ लेख भी पढ़े। पदों, छंदो, सवैयों को जितना पढ़ती गई, रस तो मिलता ही, मन में जिज्ञासा भी उतनी बढ़ती गई; फलस्वरूप एक दिन संत कृपालु जी की वाणी सुनने और उनके सत्संग में रहने का भी अवसर मिला। इसी समय मेरा उनके साहित्य 'प्रेम रस मदिरा आदि' से भी परिचय हुआ। 'प्रेम रस मदिरा' अपने नाम के अनुरूप ही सरस पदों का संकलन है। कई बार इन पदों के गायन, पठन और चर्चा आदि के समय तुलसीदास, सूरदास के पद याद आ जाते और मन विविध प्रकार के भावों और विचारों में खो जाता था। कई बार इन पदों का भक्तिकाल की प्रतिनिधि रचनाओं के साथ गंभीर चिंतन की इच्छा होती, किंतु नई–नई आकांक्षा और उपलब्धियों के उलझन के कारण मुझे समय अभाव बना रहता। हालांकि मेरी इस विषय पर हिंदी के विद्वानों और नए विद्यार्थियों के साथ चर्चा होती रहती थी, पर मुझे ही शोध का अवसर मिलेगा, यह मैंने कभी नहीं सोचा था !

दैव संयोगव"ा कुछ ऐसी परिस्थितियाँ बनीं, जब मुझे इस कार्य के लिए समय भी मिला और यह अनुभव भी हुआ कि भक्तिकाल की प्रतिनिधि रचनाओं की तरह संत कृपालु दास का साहित्य हर युग में और जीवन की हर परिस्थिती में प्रासंगिक है। इन रचनाओं में पूर्व–मध्यकालीन चेतना के साथ–साथ वर्तमान समय के भटके हुए मानव मन को दि"ाा दिखाने की अद्‌भुत क्षमता है। इन रचनाओं में पता नहीं कौन सा जादू भरा है जो अवलंब बनकर साथ रहती है। नकारात्मकता को पास फटकने नहीं देती। मुझे लगता है कि इन रचनाओं का मानव समाज में निर्बाध प्रचार होना चाहिए।

## भाोध का उद्‌दे";

1- प्रस्तुत शोधकार्य में संत कृपालु दास की रचनाओं में वर्णित जीवन द"ान की प्रासंगिकता पर विचार किया जाएगा।
2- यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि कृपालु साहित्य में भक्तिकालीन चेतना का स्वरूप क्या है ?
3- भक्ति की वि"ाुद्व चेतना मानव जीवन को कैसे सरस बनाती है?
4- कृपालु जी की रचनाएँ किस प्रकार एक लंबी अवधि के बाद प्राप्त सूर, तुलसी जैसा संत साहित्य है?
5- बिना किसी संप्रदाय या अन्य भेदभाव के चक्कर में पड़े, यह साहित्य आज के मानव समाज के मानसिक अवसादों को दूर करने में कैसे सक्षम है?

## भाोध विशय की उपादेयता

मेरा विचार है इस शोध कार्य से निम्नांकित क्षेत्रों में हमारे चिंतन का विस्तार होगा।

1- खेद की बात है कि हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन के क्रम में जैसे ही आधुनिक काल आया, आधुनिक समय के प्रतिभासंपन्न संतो के साहित्य की एकदम से उपेक्षा हो गई! जबकि इससे पूर्व 200 से भी अधिक वर्षों तक साहित्य का केन्द्रिय वर्ण्य विषय भक्ति ही था और भक्ति ने ही जनजागरण का काम भी किया था। और तो और भक्तिकाल की रचनाओं को न केवल शुद्ध साहित्य माना गया बल्कि इस काल को सभी विद्वान एक मत से स्वर्णयुग भी माना है। अतः इस शोध के माध्यम से आधुनिक युग के संत साहित्य की ओर नए विचारकों और शोधार्थियों का ध्यान जाएगा जिन्हें धार्मिक कहकर द”ाकों से उपेक्षित छोड़ दिया गया है। संभवतः यह शोध चिंतकों के आगे नए प्र”नों का सृजन करे 'क्या आधुनिक होना ई”वर को भूल जाना है ? क्या केवल रोजमर्रा के यर्थाथ पर चर्चा करना या हंगामा खड़ा करना ही अब साहित्य का उद्दे”य रह गया है? क्या लोकमंगल की भावना, पवित्रता, प्रेम, श्रद्धा, जीवन द”ान, दया आदि ई”वीय गुण बिना संत साहित्य के अध्ययन से कभी प्राप्त हो सकते हैं?

2- इक्कीसवीं सदी में मानसिक व्याधियाँ तेजी से बढ़ रही है। छोटे छोटे बच्चे इसका ि”ाकार हो रहे हैं। इस व्याधि का समाधान एक मात्र भक्तिप्राधान्य समन्वयात्मक जीवन द”ान में ही है। संत कृपालु का साहित्य पर किया यह शोधकार्य मनोविज्ञान और साहित्य दोनों क्षेत्रों को मिलाकर नए शोध करने हेतु पथ प्रद”ान करेगा।

3- संत कृपालु दास के साहित्य के प्रचार–प्रसार को केवल अनुयायियों की संकीर्ण परिधि से मुक्त कर संपूर्ण मानव समाज के पठन पाठन का विषय बनाना, जिससे हिंदी साहित्य समृद्ध हो और भारत की सांस्कृतिक विरासत को नवीन उपहार प्राप्त हो सके।

## पूर्व अध्ययन एवं भाोध कार्य

पाठ्यक्रम में शामिल साहित्येतिहास तथा मध्यकालीन हिंदी साहित्य की मूल पुस्तकों के अध्ययन के क्रम में भक्तिकालीन चेतना से मेरा प्रथम परिचय हुआ। आगे, जब भारत के मूर्धन्य संत समाज का सत्संग और महापुरुषों की वाणियों के श्रवण का लाभ मिला, तब सत्संग से प्राप्त जीवन द”ान और रुचि ने श्री कृपालु महाराज की रचनाओं को पढ़ने का भरपूर अवसर दिया।

शोध प्रस्ताव तैयार करने के क्रम में मैंने गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस, विनयपत्रिका, गीतावली, कवितावली, सूरदास जी कृत सूरसागर, रसखान रचनावली, मीरा

पद्यावली, अष्टछाप के कवियों के पद, कबीर की बानी, रहीम के दोहे, ब्रज के सवैये तथा छंद और श्री कृपालु जी के प्रमुख मूल साहित्य पढ़े । इसके अलावे कुछ आलोचनात्मक निबंध और शोधपत्र भी पढ़े, जैसे आ.रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित त्रिवेणी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित कबीर आदि।

भक्तिकालीन साहित्य पर अब तक बहुत सारे शोध हो चुके हैं। उन सब को समय सीमा में रहकर पढ़ना और उसके सार को समझकर सूचि बनाना किसी के लिए भी संभव नहीं है। अतएव, अपने शोध के अनुरूप विषय–”ाीर्षक ढूँढ़ने के क्रम में मैंने कुछ शोधपत्रों का स्वाध्याय किया है, जिनके नाम आगे संदर्भ सूचि के सहायक ग्रंथ में दिए गए हैं।

**l:r कृपालु दास पर अब तक हुए भाोध**

संत कृपालुदास पर भी वि”वविद्यालय के स्तर पर सन् 1978 से अब तक कुल छः शोध कार्य हुए हैं। इनमें से चार हिंदी विभाग से, एक संगीत विभाग से और एक अर्थ”ाास्त्र से संबंधित है । नीचे हिदी से संबंधित शोधपत्रों के नाम दिए गए हैं–

1- कृपालु दास और उनकी कविताएँ, जबलपुर वि”वविद्यालय, हिंदी विभाग 1978
2- श्रीकृष्ण भक्ति धारा के संदर्भ में श्रीकृपालु महाराज की रचनाएँ, नागपुर, हिंदी विभाग 1995
3- जगद्गुरु श्री कृपालु महाराज के साहित्य में संगीत, हरियाणा, संगीत विभाग 2004
4- जगद्गुरु कृपालु महाराज के प्रवचनों का अध्ययन, उदयपुर, हिंदी विभाग 2012
5- काव्य प्रयोजन की साहित्यिक अवधारणा और संत कृपालु महाराज का साहित्य, कोटा, 2016 हिंदी विभाग
6- जगद्गुरु कृपालु परिषत् एक अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक संस्थान, उदयपुर, 2018 अर्थ”ाास्त्रीय विभाग

## lkfgR; voyksdu

उपर्युक्त शोध कार्य में दो प्रकार की अध्ययन सामग्री होंगी। ,d oxZ dk;Z th l: lcf/kr iLrdk dk gkxk जिसे प्रस्ताव के अंत में आधार ग्रंथ की सूचि में रखा गया है और दूसरा वर्ग सहायक ग्रंथो का होगा। वर्ग एक–आधार ग्रंथ में वे मूल पुस्तकें हैं जिन्हें श्री कृपालु महाराज ने लिखी हैं अथवा अपने पदों की शास्त्रीय व्याख्या के रूप में प्रस्तुत किया है। जगद्गुरु कृपालु परिषत् और इससे संबंधित संस्थाओं से प्रका”ित वि”ोषांक, मासिक पत्रिकाएँ, प्रवचनों को लिपिबद्ध कर बनी पुस्तकें भी वर्ग एक में रखी गई हैं।

oxi nk e: lgk;d xzFkk का स्वाध्याय किया जाएगा। इसमें कुछ पुस्तकें भक्तिकालीन प्रतिनिधि रचनाएँ हैं जिन्हें पहले भी पढ़ा था लेकिन शोध के उद्दे”य से अब दोबारा पढ़ना होगा क्योंकि ये ग्रंथ भक्ति, ज्ञान और चिंतन के ऐसे महासागर हैं जिनके गहरे तल में उतरे बिना मोती हाथ नहीं लग सकती। इनके अलावे कुछ नए पुस्तक एवं शोध पत्र शामिल होगें। इनकी सूचि भी आगे प्रस्ताव के अंत में दी जाएगी।

जगद्गुरु कृपालु जी महाराज की विलक्षण प्रतिभा विद्वानों के आकर्षण का अब विषय बन चुकी है! कुछ साहित्यकारों ने संत कृपालु महाराज के साहित्य वि”ोषतः प्रेमरस मदिरा की प्र”ांसा में अपनी सम्मति भी प्रेषित करवाई है। जगद्गुरु कृपालु परिषत् के प्रका”ान विभाग द्वारा इन  सम्मतियों के कुछ अं”ा का प्रका”ान प्रेमरस मदिरा के अंतिम पृष्ठों पर भी किया गया है। ये सभी सम्मतियाँ सारगर्भित, महत्वपूर्ण और लंबी हैं। अतएव शोध में इस विषय पर सविस्तार चर्चा की जाएगी। प्रस्तुत प्रस्ताव में तीन साहित्यकारों की एक पंक्ति का उल्लेख साहित्य अवलोकन के उद्दे”य से किया जा रहा है।

1- भारत के प्रख्यात साहित्यकार Mk- jke dqekj oekZ ने तो प्रेम रस मदिरा की सम्मति में इस काव्य ग्रंथ का महत्व आज के युग में अत्यधिक बताया है। उन्होंने प्रस्तुत कृति सूर, मीरा, नंददास, रसखान, भारतेन्दु आदि समर्थ कवियों की परंपरा का एक नवीन पुष्प बताया। उन्हीं के शब्दों में *'आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेम रस मदिरा का एक वि”ोष स्थान होगा, क्योंकि इस काल में इस प्रकार की कोई सफल रचना नहीं हुई है।'*
2- लेखक एवं सागर वि”वविद्यालय हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. रमा”ांकर शुक्ल 'रसाल' ने संत कृपालु दास को 'महात्मा' कहकर संबोधित किया है। उन्होंने हिंदी साहित्य–सेवियों के लिए प्रेम रस मदिरा को हर्ष और कृपा का विषय माना है क्योंकि यह रचना केवल रचना के लिए नहीं है, वरन् प्रेम और भक्ति का अनुभव प्रसाद है।
3- छायावाद के एक प्रमुख स्तंभ श्री सुमित्रानंदन पंत ने भावुक हो कर सम्मति लिखी है। उन्होंने कहा 'परम भक्त श्री कृपालु दास जी ने मानव हृदय की पवित्रतम भावना को वाणी देकर रसिक भक्तों का बड़ा उपकार किया है।'

**'kोध कार्य की प्रासंगिकता**

इस शोध कार्य की प्रासंगिकता पर विचार करते ही मुझे कबीरदास जी की एक पंक्ति याद आती है –जो न संत जगत में होते तो जल मरता संसार! इस एक पंक्ति में संत और उनकी वाणी की प्रासंगिकता निहित है।

संस्कारों में पवित्रता, विचारों में सकारात्मकता और लक्ष्य में दृढ़ता ऐसे गुणों का प्रचार प्रसार केवल शब्दों से नहीं होता। इस कार्य के पीछे शब्द की शक्ति निहित होती है जो

एक संत को सहज ही प्राप्त होता है। प्र”न कर सकते हैं, क्यों ? संतो ्के शब्दों में युगों तक मार्गद”ान करने वाला सामर्थ्य दो कारणों से है। एक कारण है उनकी साधना या तपस्या जिसके आधार पर वे अपने मन के विकारों से लड़ते हुए अपने लक्ष्य की ओर सतत प्रयत्न”ील रहते हैं। दूसरा कारण है भगवान की कृपा, जो उनको निरंतर प्रयत्न”ील देख बरबस शक्ति के रूप में प्रकट हो जाती है। इसीलिए संत वाणी या भक्ति साहित्य सदा प्रासंगिक है। इसके अध्ययन, चिंतन आदि से हर युग में, हर काल में मन का शुद्धिकरण होता है और आत्मबल की वृद्धि होती है।

## भाोध कार्य का egRo

1- शोध का अर्थ ही है खोज! यानि ऐसी वस्तु की पुनर्प्राप्ति जो कहीं खो गई है। जैसा शीर्षक प्रस्ताव दिया गया है, उसी से अनुमान होता है कि हम खोई हुई भक्ति की चेतना का संत कृपालु महाराज की रचनाओं में पुनः आस्वादन करने का प्रयास करेंगे। हिंदी साहित्य सेवियों के लिए यह हर्ष और गौरव दोनों का विषय है कि आधुनिक युग में भी भक्तिकाल की चेतना से युक्त संत साहित्य लिखे गए हैं।
2- इस शोध कार्य में भक्त कवियों की मूल पुस्तकों, आध्यात्मिक द”ान के आधारग्रंथों एवं प्रतिष्ठित विद्वानों के महत्वपूर्ण कथन और प्रमाणों द्वारा उपर्युक्त प्राक्कथन को सिद्ध किया जाएगा।
3- भक्तिकालीन कवियों की अमानवीय बातें कई बार प्रमाण के अभाव में मानी नहीं जाती, लेकिन इस शोध में ऐसी बातों का उल्लेख किया जाएगा जिसके प्रमाण तो हैं परंतु वे सब अलौकिक बातें ही हैं !!! अतएव भक्ति में रुचि रखने वाले पाठकों को भी इस शोध से कुछ न सामग्री अव”य मिलेगी।

## भाोध की प्रविधि

1- प्रस्तुत शोध कार्य में आधार और सहायक दोनों प्रकार की सामग्री का संकलन होगा। अतएव संकलनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा।
2- भक्तिकालीन चेतना के संदर्भ में कृपालु महाराज के साहित्य के अध्ययन की पद्धत्ति समीक्षात्मक होगी।
3- भक्तिकालीन प्रतिनिधि रचनाओं और संत कृपालु महाराज के पदों के साहित्यिक वि”लेषण हेतु तुलनात्मक प्रविधि का भी प्रयोग किया जाएगा।
4- कृपालु महाराज के साहित्य के प्रका”ान वर्ष आदि के विषय में प्रमाणिक जानकारियों को एकत्र करने हेतु संस्था से संमर्क किया जाएगा।
5- कृपालु जी ने जीवनपर्यंत प्रवचन, साहित्य रचना आदि का कार्य किया है जिनको अब जगद्गुरु कृपालु परिषत् ऑडियो विडियो एवं पुस्तकों के रूप में प्रका”ात

करवा रही है। इन सबका इंटरनेट और ऐप के माध्यम से भी अध्ययन किया जाएगा।

## भाोध की रूपरेखा और अध्यायीकरण

# l r d`iky nkl d lkfgR; e HkfDrdkyhu p ruk vkj leUo; dh Hkkouk % ,d v/;;u

## 1- iFke v/;k; & l r d`iky nkl &,d ifjp;

01 संत कृपालु दास का संक्षिप्त जीवन परिचय
02 उनका समन्वयात्मक भक्ति प्राधान्य द”ान
03 पद्यात्मक रचनाएँ
04 गद्यात्मक रचनाएँ
05 कृपालु साहित्य पर साहित्यकारों और विचारकों की सम्मतियाँ

## 2- f}rh; v/;k; & d`iky lkfgR; e HkfDrdkyhu p ruk % ik lfxdrk ,o in;

01 कृपालु साहित्य में भक्तिकालीन चेतना का स्वरूप
02 भक्तिः मानव मात्र का स्वाभाविक धर्म
03 कृपालु साहित्य का मनोवैज्ञानिक प्रभाव
04 वैधी एवं रागानुगा भक्ति
05 कृपालु जी का भक्ति संबंधी मत

## 3- r`rh; v/;k; & l r d`iky nkl dk leUo;kRed n”ku

01 भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का समन्वय
02 पूर्व एवं पा”चात्य विचारों का समन्वय
03 वैष्णव आचार्यो के सिद्धांतों का समन्वय
04 निर्गुण एवं सगुणवाद का समन्वय
05 राम और कृष्ण भक्ति का समन्वय
06 राधा तत्व संबंधित विवादों का सप्रमाण निदान

## 4- prFk v/;k; & d`iky lkfgR; dk ryukRed v/;;u

01 प्रेम रस मदिरा की 21 माधुरियाँ

02 विनयपत्रिका और प्रेम रस मदिरा : दैन्य माधुरी
03 भ्रमरगीत और प्रेम रस मदिरा : विरह माधुरी
04 सूर के श्याम और कृपालु के कृष्ण
05 कृपालु साहित्य में राधा का स्वरूप
06 भक्ति शतक के 100 दोहे

5- iape v/;k;& lr dikyq nkl **की भाशा भौली**

01 तोतली बोली से विद्वानों की अलंकृत भाषा तक
02 कूट भाषा में गूढ़ सिद्धातों के निरूपण की अनूठी शैली
03 सरल गीतों में कठिन वैदिक सिद्धांतों की सरस अभिव्यक्ति

6- **'ाश्टम् अध्याय&** dikyq th d ledkyhu HkDr dfo

01 वृंदावन की भोरी सखी
02 गोस्वामी बिंदु जी महाराज
03 हनुमान प्रसाद पोद्दार
04 पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी
05 आधुनिक युग के प्रतिभा संपन्न किंतु अप्रकाि"ात भक्त कवि

ukV– शोध के दौरान अध्यायों के क्रम आदि में थोड़ा परिवर्तन संभव है।

milgkj

संदर्भ ग्रंथ
सहायक ग्रंथ
पत्रिकाएँ
इंटरनेट
अनुयायियों द्वारा प्रदान की गई प्रमाणित जानकारियाँ

**भाोध का भविश्य** & प्रस्तुत शोध के छठे अध्याय में ही आगामी चिंतन का बीज निहित है। मेरा वि"वास है कि यह शोधकार्य आधुनिक हिंदी साहित्य में उपेक्षित धारा को पुनः प्रस्तुत करेगी । प्रस्तुत शोध में जिस उदार चरित वाले व्यक्तित्व को आधार बनाया गया है, उनका समन्वयादी दृष्टिकोण हमारे चिंतन क्षेत्र को गहराई प्रदान करेगा। क्योंकि उन्होंने कभी किसी मत का विरोध नहीं किया। बल्कि सभी को उचित सम्मान दिया और सब वादों के विवादों का समन्वय किया। उन्होंने वर्तमान मनुष्य को वह रास्ता दिखाया है जिस पर चलकर वह हमे"ाा प्रगति"ील, सकारात्मक, चरित्रवान और सफल रहेगा।

कृपालु जी महाराज के करोड़ों अनुयायी भारत और विदे”ाों में भी रह रहे हैं। इनमें कई ऐसे हैं जिन्हें महाराज जी के विषय में उनके महाप्रयाण के बाद जाना है। इस शोध में उनके विषय में कई तरह की जानकारियों का संकलन एक जगह मिल जाएगा जिससे पाठक वृंद को बहुत सुविधा होगी।

## IanHkZ lwfp

आधार ग्रंथ – इस सूचि के ग्रंथों के विषय में साहित्यावलोकन वाले अनुच्छेद में सविस्तार चर्चा की गई है।

**jpukvksa ds izdk”ku ds lca/k esa tkudkjh** & कृपालु जी के साहित्य का प्रका”ान नई दिल्ली स्थित राधा गोविंद समिति द्वारा किया गया है। कुछ प्रकाि”ात हो चुकी हैं और कुछ के संकलन आदि पर अभी काम चल रहा है। श्री कृपालु महाराज ने सिद्धांत पर आधारित एक दो रचनाएँ ही स्वयं अपने हाथ से लिखी हैं, पद्य को तो चलते फिरते अपनी भाव अवस्था में गाया है या प्रवचन आदि में बोला है। वे ही कभी कभी स्वरचित पदों एवं दोहों की व्याख्या स्वयं किया करते थे, जिनको अब पुस्तकों के रूप में प्रकाि”ात किया गया है।

1- प्रेम रस मदिरा – 1008 पदों का संकलन
2- प्रेम रस सिद्धांत – राधा गोविंद प्रचार समिति द्वारा प्रकाि”ात गद्य साहित्य
3- राधा गोविंद गीत –(भाग 1, 2)राधा गोविंद प्रचार समिति द्वारा प्रकाि”ात
4- राधा त्रयोद”ाी – राधा तत्व पर 13 पद, राधा रस सुधानिधि का हिंदी में पद्यात्मक अनुवाद
5- कृष्ण द्वाद”ाी – कृष्ण तत्व की रूप माधुरी पर आधारित 12 पद
6- कृपालु भक्ति धारा–(भाग 1,2,3) राधा गोविंद प्रचार समिति द्वारा प्रकाि”ात
7- सुमिरन कर ले मना – गीत, राधा गोविंद प्रचार समिति द्वारा प्रकाि”ात
8- श्यामा श्याम गीत – राधा गोविंद प्रचार समिति द्वारा प्रकाि”ात
9- युगल शतक – 100 गीतों का संकलन
10- भक्ति शतक – 100 दोहों का संकलन
11- ब्रज रस माधुरी – 3 भागों में उपलब्ध
12- नारद भक्ति द”ार्न – कृपालु जी द्वारा नारद भक्ति सूत्र की व्याख्या
13- कामना और उपासना – गद्य – प्रवचन पर आधारित प्रकाि”ात पुस्तक
14- जगदगुरूत्तम (जीवनी) – सुश्री बनचरि दीदी द्वारा रचित
15- अहंकार और भक्ति – प्रवचन पर आधारित गद्य साहित्य
16- रूपध्यान विज्ञान –गद्य
17- 51सूत्र सफल जीवन के –गद्य

18- सेवक सेव्य सिद्धांत–गद्य
19- मैं कौन? मेरा कौन?
20- साधन साध्य मासिक पत्रिका
21- भगवत तत्व–वि”ोषांक
22- ब्रज गोपिका सेवा मि”ान से प्रका”ित त्रयमासिक पत्रिका भक्ति पीयूष
23- ब्रज गोपिका सेवा मि”ान से प्रका”ित सुमिरन कर ले मना
24- ब्रज गोपिका सेवा मि”ान से प्रका”ित अब पाना शेष है

iziopu % Lojfpr inksa dh 0;k[;k & श्री कृपालु महाराज ने अपने कई पदों की व्याख्या की है, जिनकी ऑडियो रिकॉडिंग्स आज उपलब्ध हैं। इनमें से कई यूट्यूब पर भी अपलोड किए हुए हैं ।

25- गहु रे मन श्यामा श्याम शरण– पद व्याख्या
26- गई डसि नागिनी अबहीं भोर– पद व्याख्या
27- अरी ओ माला बेचनिहार– पद व्याख्या
28- बलि श्री गुरुदेव कृपाल की– पद व्याख्या
29- उधो! कहियो हरि समुझाय – पद व्याख्या
30- मैया मोहिं दे दै माखन रोटी– पद व्याख्या
31- अनोखी वीणा वारी नारी– पद व्याख्या
32- सुनो मन एक काम की बात– पद व्याख्या
33- सोच मन श्याम मिलन की बात– पद व्याख्या
34- श्याम मोहि देहु प्रेम निष्काम– पद व्याख्या
35- नाथ जनि अब मो कहँ बहकाय – पद व्याख्या
36- कैसे हो भगवान भला तुम– पद व्याख्या
37- सदा सों सोई दुलहिनी जाग– पद व्याख्या
38- सुनो मन, एक अनोखी बात– कृपालु महाराज द्वारा की गई पद व्याख्या
39- सखी यह कैसो है ब्रजधाम– कृपालु महाराज द्वारा की गई पद व्याख्या
40- धन्य सोई जोई स्वारथ पहचान – कृपालु महाराज द्वारा की गई पद व्याख्या
41- मान मन छाडु मान अपमान– कृपालु महाराज द्वारा की गई पद व्याख्या

## lgk;d xzFk

44- गीतापुर गोरखपुर से प्रकाि”ात तुलसीकृत विनयपत्रिका
45- गीतापुर गोरखपुर से प्रकाि”ात तुलसीकृत गीतावली
46- तुलसीकृत कवितावली
47- सूरसागर सार
48- भ्रमरगीत
49- विद्यानिवास मिश्र द्वारा संपादित रसखान रचनावली
50- श्री नीलोत्पल द्वारा संपादित मीरा पद्यावली
51- पंडित कंठमणि शास्त्री द्वारा संकलित अष्टछाप के कवि
52- गोकुलनाथ जी कृत चौरासी वैष्णवन की वार्ता
53- अन्य फुटकल रचनाएँ – कबीर और रहीम के दोहे, ब्रज के सवैये और छंद
54- आ.रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य का इतिहास
55- आ.रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित त्रिवेणी
56- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की हिंदी साहित्य की भूमिका
57- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित कबीर
58- आ.रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित भ्रमरगीत
59- आ.रामचंद्र शुक्ल द्वारा चिंतामणि
60- भक्तिकालीन प्रतिनिधि कवियों की भाषा एवं परिवे”ा
61- भक्तिकालीन काव्य में मानव मूल्य
62- भक्तिकालीन साहित्य में राग और रंग
63- ब्रजलोक साहित्य में संगीत
64- कृष्ण काव्य में परकीया भाव
65- श्री हित हरिवं”ा के पद
66- स्वामी हरिदास के पद
67- श्रीभट्ट द्वारा रचित युगल शतक
68- हरिराम व्यास जी के पद
69- राम भक्ति शाखा के प्रमुख भक्त कवि
70- पलटु साहिब की वाणी
71- रैदास की वाणी
72- डॉ. नामवर सिंह का दूसरी परंपरा की खोज
73- हिंदी आलोचना में भक्ति काव्य का मूल्यांकन
74- भक्तिकालीन हिंदी साहित्य में योग की भावना
75- डॉ. रामकुमार वर्मा का हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

76- डॉ लक्ष्मी नारायण महतो का शोधपत्र राधा कृष्ण का दुलर्भ और अप्रकाशित साहित्य
77- डॉ. के.अप्पाराव का शोधपत्र हनुमान प्रसाद पोद्दार
78- सूर साहित्य के प्रतिमान– डॉ. दारोगा सिंह का शोधपत्र
79- हिंदी के प्रतिष्ठित विद्वानों की कृपालु महाराज के संबंध में सम्मतियाँ
80- हनुमान प्रसाद कृत पद रत्नाकर
81- भोरी सखी कृत प्रेम की पीर
82- भक्तिकाल के कवि एवं उनकी रचनाएँ
83- गोस्वामी बिंदु जी महाराज का जीवन परिचय एवं पद
84- पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी का जीवन परिचय एवं साहित्य